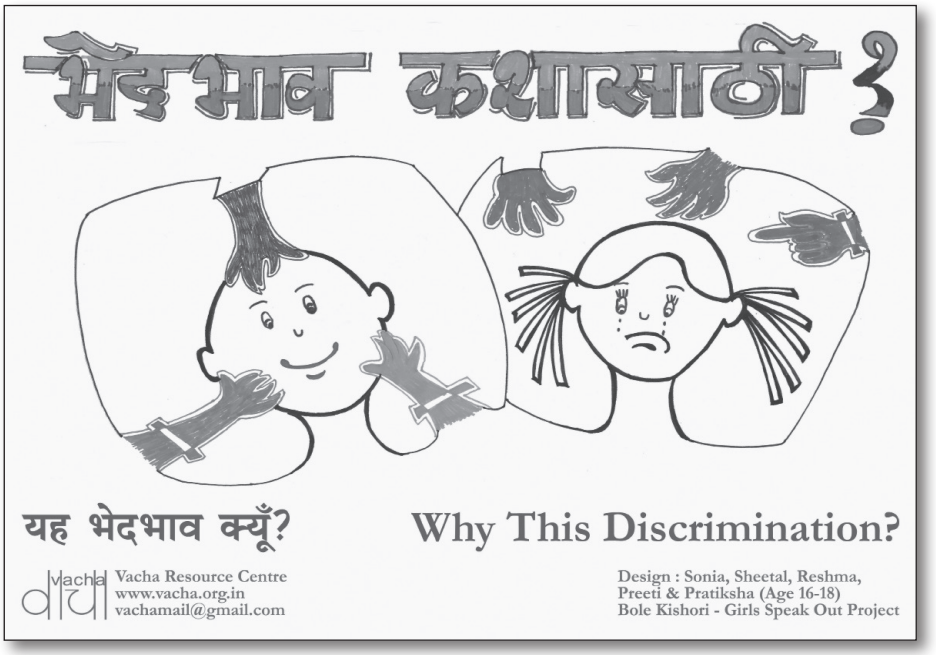

किशोरियों के साथ वाचा

मेधाविनी नामजोशी

वाचा महिला *एवं किशोरी संसाधन केन्द्र* पिछले 25 सालों से महिलाओं की समस्या और संगठन तथा सशक्तिकरण के कामों से जुड़ी है। वाचा पिछले एक दशक से 10 से 20 साल की किशोरियों के साथ उनके सशक्तिकरण पर काम कर रही है। हम लड़कियों के साथ खासतौर पर काम करते हैं ताकि उनका आत्मविश्वास बढ़े और जीवन के अनेक अनुभवों, कठिनाइयों का सामना करने के लिए उन्हें संसाधनों की जानकारी मिले।

हमारे समाज में लड़के और लड़कियों में बहुत भेदभाव किया जाता है। लड़कियों के जीवन का संघर्ष तो उनके जन्म को नकारा जाने से ही होता है। अगर इससे बचकर लड़कियों ने जन्म लिया भी तो सेहत, शिक्षा जैसे ज़रूरी संसाधनों तक वे पूरी तरह पहुंच नहीं पाती हैं। विशेष रूप से जब वह किशोरावस्था में पहुंच जाती हैं तो उन पर और भी ज़्यादा पाबंदियां लागू होती हैं। किशोरावस्था में लड़कों और लड़कियों के बीच फ़र्क़ पर भी ज़्यादा गौर नहीं किया जाता। यह अवस्था लड़कों में आज़ादी, और उत्साह लाती है। लड़कियों के लिए किशोरावस्था इन सब एहसासों के साथ पाबंदियां, रोक-टोक और घर के काम से जुड़ी ज़िम्मेदारियां लाती है। सच तो यह है कि हमारे समाज में बचपन अभी छूटा भी नहीं कि लड़कियों को औरत के रूप में ढालने की शुरूआत हो जाती है।

हम मुंबई की जिन बस्तियों में काम करते हैं वहां पर बसे लोग ज़्यादातर मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखंड, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु तथा महाराष्ट्र के अलग-अलग इलाकों से मुंबई में कामकाज की तलाश में आते हैं। सालों से मुंबई में आकर बसने के बावजूद भी अपने गांव और वहां के तौर-तरीक़ों से वे बहुत गहरा संबंध रखते हैं। इसके कारण आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े वर्ग से होने के कारण किशोरियों को अपने विकास के लिए कम अवसर मिलते हैं।

बाहरी समाज से इन किशोरियों का संबंध सिर्फ़ स्कूल के ज़रिए ही होता है। जब अनेक सामाजिक तथा पारिवारिक ज़िम्मेदारियां होने के कारण वे बड़ी तादात में शिक्षा व्यवस्था से बाहर निकल जाती हैं, तब शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास के सारे अवसर उनसे छीन लिए जाते हैं। इसी कच्ची उम्र में समाज व परिवार उन्हें मां व बीवी के रूप में ढालने की शिक्षा और अपेक्षा करने लगता है। इन सब वजहों से किशोरियों की क्षमताओं का पूर्ण विकास नहीं हो पाता। वह अक्सर हिंसा और उपेक्षा का शिकार होती हैं। हम मानते हैं कि अपने सशक्तिकरण के सारे अवसरों व संसाधनों पर हर तबके से आने वाले किशोरियों का भी अधिकार है। अगर आज वह सक्षम बनती हैं तो वे कल की सभी चुनौतियों का सामना सजगता और आत्मविश्वास से कर सकेंगी।

इसी उद्देश्य से प्रेरित होकर हम अलग-अलग गतिविधियों के माध्यम से लड़कियों के साथ काम करते हैं ताकि उनमें अपनी बातें कहने, अपने अधिकार समझने, जेंडर का उनके जीवन पर होने वाला असर को जानने, अपने विकास के संसाधन समझने तथा अपनी परिस्थिति से जूझने की क्षमता बढ़ सके।

वाचा संस्था 12 बस्तियों में युवाओं के लिए संसाधन केन्द्र चलाती है। इनमें से 6 केन्द्र सिर्फ़ युवतियों के लिए है और बाकी लड़के और लड़कियों दोनों के लिए हैं।

जहां पर सिर्फ़ लड़कियों के केन्द्र चलते हैं वह लड़कियों की एक खास जगह बन गई है। एक ऐसी जगह जहां पर उनके उठने, बैठने व बात करने के तौर-तरीक़ों पर कोई पाबंदी नहीं है। जहां पर उनको लड़की हो तो चुप रहो ऐसा नहीं सुनना पड़ता। जहां वह एक दूसरे के साथ बातें कर सकती हैं, अपनी समस्याएं व सपने एक दूसरे से बांट सकती हैं। समाज में युवकों के लिए ऐसी कई जगहें मौजूद हैं जहां वे अपने हमउम्र साथियों के साथ मिल बैठ सकते हैं, आपस में दोस्ती कर सकते हैं जिससे उनका एक सामाजिक दायरा बनता है। वाचा केन्द्रों द्वारा यही अवसर युवतियों को दिया गया है।

इन केन्द्रों में उनके साथ की जाने वाली गतिविधियां कुछ इस प्रकार की हैं —

- मूल अंग्रेज़ी व कम्प्यूटर का प्रशिक्षण
- जीवन कौशल
- अलग-अलग विषयों की कार्यशालाएं जैसे- सेहत और किशोरावस्था, स्वच्छता, फ़ोटोग्राफी, नुक्कड़ नाटक, चित्रकला तथा हस्तकला, जेंडर, सामान्य ज्ञान, खाद्य अधिकार आदि।
- मोबाइल लाइब्रेरी
- सरकारी अस्पताल, डाकघर, रेलवे स्टेशन, राशन की दुकान, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की जानकारी
- सेहत और जेंडर मेला
- फ़िल्म शो और चर्चा
- चित्र और लेखन प्रतियोगिता
- आरोग्य जांच

मुंबई शहर में अगर थोड़ा बहुत अंग्रेज़ी बोलना आता है तो दुकानों, मॉल्स या अमीरों के घरों में अच्छी तनख्वाह वाला काम मिल जाता है। कम्प्यूटर की शिक्षा भी आज हरेक के लिए ज़रूरी हो गई है। सरकार भी अब कई सारी जानकारियां ऑनलाइन कर रही है। ऐसे में कम्प्यूटर का इस्तेमाल न आना लड़कियों और महिलाओं को विकास के अवसरों से दूर ले जाने का काम करता है। इसी को ध्यान में रखते हुए वाचा युवतियों को वर्ड, पॉवर प्वांइट, एक्सेल, इंटरनेट की शिक्षा देती है। अंग्रेज़ी के साथ-साथ उनको देवनागरी लिपी में भी काम करने की शिक्षा दी जाती है। अलग-अलग कार्यशालाओं के माध्यम से उन्हें ज़रूरी जानकारी जैसे सेहत, किशोरावस्था व जेंडर के बारे में जागृत किया जाता है। अन्य ज़रूरी कौशल जैसे शब्दकोश या नक्शा पढ़ना, अपनी खुद की बस्ती का नक्शा बनाना भी सिखाया जाता है।

किशोरियों के व्यक्तित्व को नए आयाम देने के लिए उन्हें नुक्कड़ नाटक, सभा में भाषण करना जैसे कौशल भी सिखाए जाते हैं। हमारे समाज में जहां औरतों और लड़कियों को खामोश रहना एक अच्छी औरत की/लड़की की निशानी होती है वहां इस प्रकार समाज में सबके सामने बोलने की ताकत मिलना बहुत मायने रखता है।

वाचा से मिले प्रशिक्षण के आधार पर युवतियां अपनी खुद की पत्रिका भी प्रकाशित करती हैं। हर केन्द्र की तरफ से साल में दो बार यह पत्रिका प्रकाशित की जाती है। आज तक हर केन्द्र द्वारा 7 अंक प्रकाशित हो चुके हैं। किशोरियों को इस काम का प्रशिक्षण दिया जाता है और फिर हर बस्ती में अलग-अलग समितियों का गठन किया जाता है। यह समितियां निश्चित करती हैं कि किसका साक्षात्कार कब और कौन करेगा, फोटो कौन से जाएंगे, समस्याएं कौन सी उठाई जाएंगी तथा संपादन की ज़िम्मेदारी किसकी होगी।

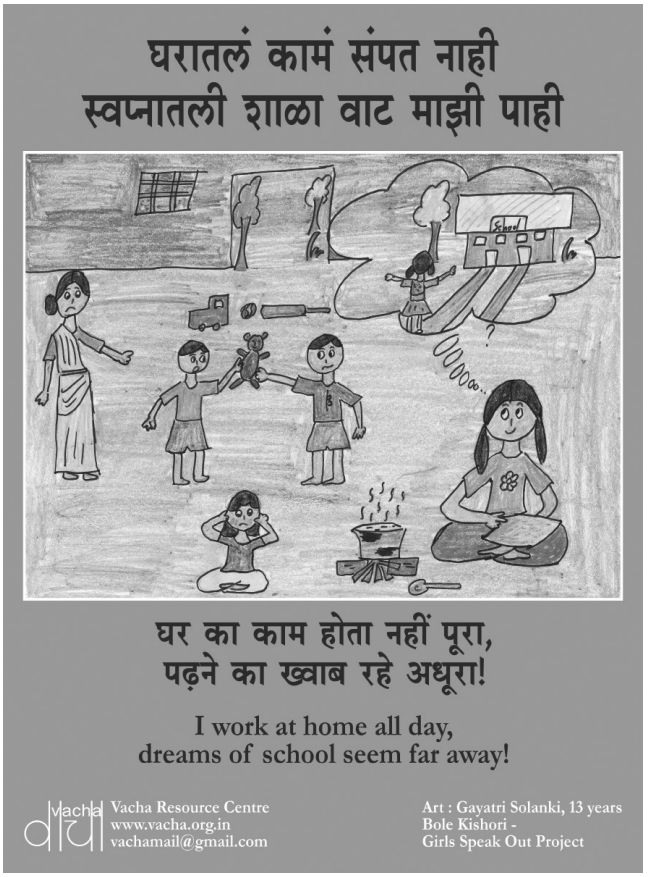

इन पत्रिकाओं को 15 अगस्त और 26 जनवरी के अवसर पर बस्ती में लड़कियों के बनाए हुए कोलॉज, पोस्टर्स, चित्र प्रदर्शनी के साथ सजाया जाता है। अलग-अलग विषयों पर आधारित नुक्कड़ नाटक और गानों का भी कार्यक्रम होता है। लड़कियां नुक्कड़ नाटक और भाषणों द्वारा हासिल की हुई जानकारी समाज तक पहुंचाने का अवसर पाती हैं।

लड़कियों की उभरती समझ, अभिव्यक्ति तथा तकनीक का कौशल देखकर लोगों का उनके प्रति नज़रिया बदलता है। वाचा की लड़कियों ने आज तक पत्रकार परिषद, राष्ट्रीय परिसंवाद तथा अध्यापक संगठन के प्रतिनिधियों के सामने भी पॉवर प्वांइट के माध्यम से अपनी बातें रखी हैं।

किशोरियों को तकनीकी तथा कम्प्यूटर, कैमरे जैसे साधनों का इस्तेमाल सिखाने से उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है और वे अभिव्यक्ति के नए तरीके सीखती हैं।

लड़कियां जब कैमरे लेकर अपनी बस्ती में घूमती हैं तो उन्हें कई बार अपने परिवार व बस्तीवालों के तानों या विरोध को सहना पड़ता है। हमारी बस्ती में जब एक लड़की फ़ोटो खींच रही थी तब उसके पिता ने गुस्सा होकर उससे कैमरा छीन लिया और उसका सेंटर आना भी बंद करवा दिया था। हमारे कार्यकर्ता ने बड़ी सावधानी से लड़की के पिता को समझाया। उसी बस्ती में जहां लड़के लड़कियों को तंग करते थे वहां लड़कियों के फोटो देखकर सब इतने प्रभावित हुए कि उस बस्ती में आज एक युवा समूह गठित हुआ है जिसमें लड़के और लड़कियां दोनों शामिल हैं।

लड़कियों की पत्रिका में नाले साफ़ न होने की बात को पढ़कर स्थानीय नगर सेवक ने तुरन्त सफ़ाई का काम करवाया। तब से लड़कियां नियमित रूप से उनके पास अपनी समस्याएं लेकर जाती हैं।

पिछले साल में किशोरियों द्वारा ली गई तस्वीरों की प्रदर्शनी मुंबई के जाने माने काला घोड़ा फेस्टिवल में हुई थी। इस फेस्टिवल में हमारी दो लड़कियों ने दूसरा और तीसरा स्थान हासिल किया है।

लड़कियों को अपने अधिकारों के प्रति जागृत करना, अपनी आवाज़ बुलंद करके समाज में उठ खड़े होने की ताकत देना बहुत महत्वपूर्ण होता है। पर साथ ही यह हम सबके लिए एक बड़ी ज़िम्मेदारी भी होती है क्योंकि अपने परिवार व समुदाय को साथ लेकर हर क़दम सावधानी से उठाना ज़रूरी है।

मेधाविनी नामजोशी, *वाचा महिला एवं किशोरी संसाधन केन्द्र में कार्यरत हैं।*